1. **सावधान ज्ञान का नाम ही ध्यान है |**
2. **जो मानता स्वयं कोसबसे बड़ा है**

**वह धर्म से अभी बहुत दूर खड़ा है |**

1. **अर्थ की तुला से परमार्थ को मत तौलो |**
2. **अर्थ के पीछे अनर्थ मत करो |**
3. **उद्योग में हिंसा समझ में आती है,**

**हिंसा का उद्योग समझ से परे है |**

1. **धन की प्राप्ति कदाचित पुण्य का फल हो सकता है,**

**पर उसका सदुपयोग तपस्या का फल है |**

1. **जीवन का उपयोग करो, उपभोग नहीं |**
2. **अभिमान पतन का कारण है|**
3. **संसार से मोक्ष की ओर जाना है तो बस इतना करो कि जिधर मुख है,**

**उधर पीठ कर लो और जिधर पीठ है उधर मुख कर लो**

1. **गुरु की आज्ञा में चलना ही गुरु की सच्ची विनय हैं |**
2. **आवेग में विवेक मत खोओ|**
3. **बहुत नहीं बहुत बार पढ़ो |**
4. **पेट भरने की चिंता करो, पेटी भरने की नहीं|**
5. **अपने धन को द्रव्य बनाओ और उसे वहां पहुंचाओ जहां उसकी आवश्यकता है|**
6. **जिस व्यक्ति का हृदय दया से भीगा नहीं है, उस हृदय में धर्म का अंकुर नहीं फूट सकता|**
7. **वासना का सम्बन्ध न तो तन से हैं और न वसन से है, अपितु माया से प्रभावित मन से है|**
8. **किसी के दुख को देख कर दुखी होना ही सच्ची सहानुभूति है।**
9. **मरहम पट्टी बांधकर व्रण का कर उपचार,**

**ऐसा यदि ना बन सके डंडा तो मत मार।**

1. **लायक बन नायक नहीं, करना है कुछ काम**

**ज्ञायक बन गायक नहीं, पाना है शिवधाम|**

1. **उस पथिक की क्या परीक्षा पथ में शूल नहीं,**

**उस नाविक की क्या परीक्षा धारा प्रतिकूल नहीं|**

1. **प्रतिभा देश की सबसे बड़ी संपत्ति है इसका पलायन नहीं होना चाहिए**
2. **धन का संग्रह अनुग्रह के लिए करो परिग्रह के लिए नहीं |**
3. **तुम भीतर जाओ,तुम्बी सम, तुम भीतर जाओ|**
4. **जो दिख रहा है वह मैं नहीं हूँ, जो देख रहा है वह मैं हूं|**
5. **मन की मलिनता धर्म की तेजस्विता को नष्ट कर देती है |**
6. **यदि तुम समर्थ हो तो असमर्थो को समर्थ बनाओ,यही समर्थ होने का सच्चा लाभ है |**
7. **सत्य केवल शाब्दिक अभिव्यक्ति का साधन नहीं, अनुभूति की साधना है|**
8. **जैसे पानी के प्रवाह के बिना नदी की शोभा नहीं होती,**

**वैसे ही नैतिकता के अभाव में मनुष्य की शोभा नहीं|**

1. **मनुष्य के अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक है उसका प्रमाद|**
2. **दूसरों की निंदा करना सबसे निंदनीय कार्य है|**
3. **अपनी वासना का शमन ही सच्ची उपासना है |**
4. **संघर्षमय में जीवन का उपसंहार हमेशा हर्षमय होता है|**
5. **जीवन के उतार चढ़ाव में ठहराव बनाए रखना ही जीने की कला है|**
6. **आदेश नहीं अनुरोध की भाषा का प्रयोग करो |**
7. **वीतरागी बनने का  ध्येय रखे, वित्त रागी नहीं।**
8. **अच्छे लोग दूसरों के लिए जीते हैं जबकि दुष्ट लोग दूसरों पर जीते हैं|**
9. **नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं|**
10. **जिस तरह कीड़ा कपड़ों को कुतर देता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को|**
11. **जिन्हें सुंदर वार्तालाप करना नहीं आता, वही सबसे अधिक बोलते हैं|**
12. **दूसरों के हित के लिए अपने सुख का त्याग करना ही सच्ची सेवा है|**
13. **धर्म पंथ नहीं पथ देता है|**
14. **चार पर विजय प्राप्त करो- १. इंद्रियों पर २. मन पर ३. वाणी पर ४. शरीर पर|**
15. **यश त्याग से मिलता है, धोखाधड़ी से नहीं|**
16. **डरना और डराना दोनों पाप है|**
17. **चरित्रहीन ज्ञान जीवन का बोझ है|**
18. **सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता|**
19. **अहिंसा की ध्वजा जहाँ लहराती है, वहाँ सदा मंगलमय वातावरण रहता है।**
20. **उस ओर कभी मत जाओ, जिस ओर तुम्हारे चरित्र में पतन होने का खतरा हो।**
21. **देशवासी का प्रथम कर्तव्य अपने देश के स्वाभिमान की रक्षा करना हैं |**
22. **क्रोध रुपी अग्नि, पूण्य रूपी रत्नों को जल देती हैं |**
23. **क्रोध अपने स्वभाव की कमजोरी है |**
24. **क्रोध में बोध नहीं होता और क्षमा में विरोध नहीं होता |**
25. **क्रोध मनुष्य के जीवन को एकाकी बनाता है |**
26. **गुरू ही परमात्मा तक पहुँचाते हैं |**
27. **गुरू की आज्ञा और वचन, सूत्र के सामान होते हैं |**
28. **जिसका हदय दया से द्रवीभूत नहीं हैं, उसमें धर्म के अंकुर संभव ही नहीं हैं |**
29. **दीन-दु:खी जीवों की पीड़ा देखकर जिनकी आँखों में पानी नहीं आता, वह आँख, आँख नहीं छेद है, फिर छेद तो नारियल में भी होता हैं |**
30. **नम्रता के आगे कठोरता सदैव पिघलती है |**
31. **दया धर्म से ही धर्म की रक्षा संभव है |**
32. **दया और करुणा के अभाव में मानवता का प्रकाश प्राप्त होना संभव नहीं |**
33. **दयाधर्म की रक्षा करना ही मानवता की रक्षा करना है |**
34. **हम किसी को जीवन नहीं दे सकते, किन्तु जीवन बचा तो सकते हैं |**
35. **महत्वपूर्ण जन्म नहीँ, जीवन है |**
36. **सरलता, सादगी और सदभावना ही जीवन का सही धर्म है |**
37. **धन से सुविधायें मिल सकती है, सुख नहीं**
38. **परिश्रम से अर्जित धन सौभाग्य का दाता होता है |**
39. **परलोक गमन के समय पैसा नहीं पुण्य काम आता है |**
40. **ज्ञान एक ऐसा धन हैं, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है**
41. **जोड़ने का प्रयत्न करो, तोड़ने का नहीं, क्योंकि तोड़ना सरल है पर जोड़ना काफी कठिन है |**
42. **सबके कल्याण की भावना रखने वाला अपने कल्याण का बीजारोपण कराता हैं |**
43. **दूसरे का हित करके अपने हित का साधन करना चाहिए |**
44. **सत्य परेशांन हो सकता है, परंतु पराजित नहीं |**
45. **समय देना महत्वपूर्ण नहीं, समय के अनुरूप कार्य करना महत्वपूर्ण है |**
46. **अवसर आने पर जो उपकार किया जाता है, वह देखने में भले ही छोटा हो पर वास्तव में सबसे बड़ा होता है |**
47. **आपकी अपनी असफलता में ही सफलता का रहस्य छुपा होता है |**
48. **आधुनिकता की होड़ में अपनी मूल संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए |**
49. **दीपक के तरह की जलना नहीं, सूर्य के तरह चमकना सीखो |**
50. **पथिक को पहले पथ नहीं प्रकाश चाहिए |**
51. **कत्लखाने भारतीय इतिहास के लिये कलंक हैं |**
52. **क़त्लखानों का आधुनिकीकरण दुर्भाग्यपूर्ण है |**
53. **आस्था मस्तिष्क में नहीं हृदय में जन्मती है, अत: हमारी आस्था का केन्द्र ज्ञान सम्पन्न मस्तिष्क नहीं, बल्कि भावना सम्पन्न हृदय होता है |**
54. **“ही” एकान्त का प्रतीक है और "भी" अनेकान्त का |“ही” में किसी की अपेक्षा नहीं है जबकि "भी" पर के अस्तित्व को स्वीकार करता है |**
55. **हमें दूसरों की बात बिना पूर्वाग्रह के सुनना चाहिए, यही तो अनेकान्त का मूल मन्त्र है|**